

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 11, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, अवतार, जॉन परिचय

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 11 है, नए नियम में विशेष प्रकाशितवाक्य, अवतार, यूहन्ना परिचय।

प्रकाशितवाक्य और विशेष रूप से पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों पर हमारे व्याख्यानों में आपका स्वागत है।

और कृपया मेरे साथ प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने सामान्य प्रकाशन में सभी मानवजाति के लिए खुद को प्रकट करने का चुनाव किया है और आपने अपने लोगों को विशेष प्रकाशन दिया है, यहाँ तक कि उन सभी को भी जो आपके पुत्र पर विश्वास करते हैं। हमें आशीर्वाद दें क्योंकि हम इन चीजों की खोज करते हैं, विशेष रूप से आज सुबह, जब हम आपके देहधारी पुत्र में आपके प्रकाशन की खोज करते हैं।

हम उनके पवित्र नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन। विद्यार्थियों को यह जानकर आश्चर्य हुआ है कि नए नियम में पुराने नियम की तरह हर तरह का विशेष प्रकाशन है, सिवाय उस एक के जो महायाजक के पद और व्यक्तित्व तथा वेशभूषा से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, अर्थात् ऊरीम और तुम्मीम, लेकिन बाकी सभी मौजूद हैं, फिर भी दो अलग हैं।

यह अवतार के रूप में विशेष रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र में विशेष रहस्योद्घाटन है। अंतिम विषय हमारे पाठ्यक्रम का मुकुट है, और हम अपना अधिकांश समय इस पर व्यतीत करेंगे, लेकिन अवतार के रूप में रहस्योद्घाटन की उपेक्षा की जाती है। हम सही ढंग से देखते हैं कि सुसमाचारों में यीशु, सबसे पहले, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता हैं, इसलिए हम उनकी आराधना करने के लिए उन्हें पढ़ते हैं, और यह सही है।

हम यह भी सही रूप से देखते हैं कि नया नियम यीशु को प्रस्तुत करता है; वह खुद को प्रस्तुत करता है, और प्रेरित भी हमारे उदाहरण के रूप में ऐसा ही करते हैं। कभी भी उसके उदाहरण का अनुसरण करना ईसाई बनने का तरीका नहीं है, लेकिन यह ईसाई जीवन की सामग्री का हिस्सा है। सुसमाचारों में यीशु के व्यक्तित्व, शब्दों, कार्यों और सेवकाई का एक उपेक्षित पहलू यह है कि वह ईश्वर का प्रकटकर्ता है।

वह उद्धारकर्ता और प्रभु है; हम उसकी पूजा करते हैं, वह एक उदाहरण है, हम ईसाई जीवन के लिए उसके उदाहरण का अनुसरण करते हैं। वह ईश्वर का प्रकटकर्ता है, जो ईश्वर को पहले कभी नहीं प्रकट करता है। ईश्वर के पुत्र का अवतार आज तक ईश्वर का सबसे पूर्ण रहस्योद्घाटन है, इब्रानियों 1:1 और 2, और हम इसके बारे में पवित्र शास्त्र में सीखते हैं, इसलिए हम यह नहीं कह रहे हैं कि हम बाइबल के अलावा यीशु के बारे में सीखते हैं।

अदृश्य परमेश्वर अपने आपको अवतार में दृश्यमान बनाता है। "परमेश्वर को, जो एकलौता पुत्र है, जो स्वयं परमेश्वर है और पिता के निकट है, किसी ने कभी नहीं देखा। उसी ने उसे प्रकट किया है," यूहन्ना 1:18, क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल।

ईश्वर-मनुष्य अद्वितीय रूप से प्रकटकर्ता और रहस्योद्घाटन दोनों होने के लिए योग्य है। एरिक्सन की अंतर्दृष्टि सहायक है। यही मिलार्ड एरिक्सन का ईसाई धर्मशास्त्र है।

"मसीह की मानवता ही ईश्वरत्व के प्रकटीकरण का माध्यम थी।" प्रेरितों को जीवन के वचन के देहधारी होने का संवेदी अनुभव होता है।

वह यूहन्ना की अभिव्यक्ति में है जिसे हमने सुना है, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा है, जिसे हमने देखा है, और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ है, 1 यूहन्ना 1, 1, जिस पर हम वापस लौटेंगे। यीशु अपने चरित्र, शब्दों और कार्यों में परमेश्वर को प्रकट करते हैं। उनका चरित्र परमेश्वर को पहले से कहीं ज़्यादा प्रकट करता है।

देहधारी पुत्र "अदृश्य परमेश्वर की छवि" है, कुलुस्सियों 1:15। उद्घरण, परमेश्वर की महिमा की चमक और उसकी प्रकृति का सटीक प्रतिनिधित्व। उद्घरण समाप्त, इब्रानियों 1:3। प्रेरित गवाही देते हैं कि मसीह में वे परमेश्वर की महिमा, अनुग्रह और सच्चाई देखते हैं, यूहन्ना 1:14।

जब उनके शिष्यों में से एक ने ईश्वरीय दर्शन के लिए पूछा तो यीशु क्रोधित हो गए। हमें पिता दिखाओ, बस यही हमारी ज़रूरत है। यीशु कहते हैं, "क्या मैं इतने समय से तुम्हारे बीच में हूँ और तुम मुझे नहीं जानते, फिलिप? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तुम कैसे कह सकते हो कि पिता को हमें दिखाओ," यूहन्ना 14:9। यीशु का चरित्र परमेश्वर को पवित्र, न्यायी, उदार, दयालु, करुणामय, विश्वासयोग्य, सत्यनिष्ठ, शक्तिशाली, संप्रभु और बुद्धिमान के रूप में प्रकट करता है।

एक बार फिर, यीशु का चरित्र परमेश्वर को प्रकट करता है। याद रखें, वह, यीशु अन्य बातों के अलावा परमेश्वर को प्रकट करने वाला है। वह परमेश्वर को पवित्र, न्यायी, उदार, दयालु, करुणामय, विश्वासयोग्य, सत्यनिष्ठ, शक्तिशाली, प्रभुता संपन्न और बुद्धिमान के रूप में प्रकट करता है।

यीशु के शब्द परमेश्वर को पहले कभी नहीं प्रकट करते। हालाँकि परमेश्वर पुराने नियम के समय में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा स्वयं को प्रकट करता है, सर्वोच्च रूप से, उद्घरण, इन अंतिम दिनों में उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, इब्रानियों 1:1 और 2। यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भेजी गई मंदिर की पुलिस खाली हाथ लौट आई। क्यों? वे उत्तर देते हैं, उद्घरण, किसी भी व्यक्ति ने कभी इस तरह नहीं कहा, यूहन्ना 7:46।

यीशु स्वयं घोषणा करते हैं, उद्घरण, जो शब्द मैंने तुमसे कहे हैं वे आत्मा हैं और जीवन हैं, यूहन्ना 6:63। उनके शब्द इतने शक्तिशाली रूप से परमेश्वर को प्रकट करते हैं कि यीशु को अस्वीकार

करना बाइबिल के रहस्योद्घाटन को अस्वीकार करना है, यूहन्ना 5:38 से 47। यीशु को अस्वीकार करना मूसा को अस्वीकार करना है।

यीशु ने उन लोगों को क्या ही अपमानजनक शब्द कहे जो मूसा के लिए मरना चाहते थे, लेकिन जो मूसा के लेखों में बताए गए व्यक्ति, अर्थात् यीशु, मसीहा और परमेश्वर के पुत्र को अस्वीकार करते हैं। यीशु के कार्य भी परमेश्वर को पहले से कहीं अधिक प्रकट करते हैं। उनके चमत्कार परमेश्वर की उपस्थिति की प्रबल गवाही देते हैं, मत्ती 12:28।

यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो लूका कहता है कि परमेश्वर की उंगली से, तब परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है। यीशु के चमत्कार परमेश्वर की शक्ति, मत्ती 8:23 से 27, परमेश्वर के न्याय, मत्ती 11:20 से 24, और उसकी करुणा, मत्ती 9:18 से 25, और 14:14 को प्रमाणित करते हैं। इसके अलावा, उसके उपचार, भूत भगाने, और प्रकृति के चमत्कार मृतकों के पुनरुत्थान और नई पृथ्वी की आशा करते हैं।

जैसा कि बाविक ने दावा किया है, हरमन बाविक ने हठधर्मिता में सुधार किया, मूल तीन खंडों का अंततः अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और यहां तक कि एक खंड में संक्षिप्त भी किया गया है, बाविक के हवाले से, अंतिम महिमा की प्रत्याशा विशेष रूप से यीशु के उपचार और सृष्टि को पुनर्स्थापित करने के शक्तिशाली कार्यों में देखी जा सकती है, उद्धरण समाप्त। यीशु के सबसे महान रहस्योद्घाटन कार्य उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान हैं, जैसा कि हम देखेंगे, जो परमेश्वर की बुद्धि, इफिसियों 1:7, और 8, प्रेम, रोमियों 5:6 से 8, धार्मिकता, रोमियों 3, 25, 26, शक्ति, इब्रानियों 2:14, 15, और बहुत कुछ प्रकट करते हैं। भगवान की इच्छा से, हम उन सभी अंशों को देखेंगे जिनका अभी सर्वेक्षण किया गया है।

नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, अवतार। हमारे परिचय को जारी रखते हुए, 1 यूहन्ना 1:1। सुसमाचार का लेखक इन तीन पत्रों का लेखक है। वह लिखता है कि जो शुरू से था, 1 यूहन्ना 1:1, जो हमने सुना है, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा है, जिसे हमने ध्यान से देखा है और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ है, वह जीवन का वचन है।

जीवन प्रकट हुआ, श्लोक 2। हमने इसे देखा है, आपके सामने गवाही दी है, और आपको उस अनन्त जीवन की घोषणा करते हैं, जो पिता के साथ था और हमारे सामने प्रकट हुआ। हम वही घोषणा करते हैं जो हमने देखा और सुना है ताकि आप भी हमारे साथ संगति कर सकें। और वास्तव में, हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।

और हम ये बातें इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारा आनन्द पूरा हो सके। जो शुरू से था, जैसा कि यूहन्ना ने कहा, यूहन्ना का सुसमाचार उत्पत्ति 1:1 से उद्धरण के साथ शुरू होता है। यूहन्ना का पहला पत्र उसी के संकेत के साथ शुरू होता है। जो शुरू से था, थोड़ी देर बाद वह जीवन के वचन के बारे में कहता है, और बाद में वह उसे अनन्त जीवन कहता है।

यीशु वास्तव में, जैसा कि वह यूहन्ना 14: 6 में कहता है, मार्ग, सत्य और जीवन है। वह परमेश्वर के अनन्त पुत्र के रूप में अपने आप में अनन्त जीवन रखता है; देहधारी होने पर भी, यह अभी भी

वही है; वह अपने आप में अनन्त जीवन रखता है। और वह अपने लोगों को, यहाँ तक कि उन सभी को जो उस पर विश्वास करते हैं, अनन्त जीवन देता है।

यहाँ यूहन्ना जिस बात की ओर ध्यान आकर्षित करता है, वह यह है कि उसने और अन्य प्रेरितों ने इस शाश्वत शब्द, इस जीवित शब्द, या जीवन के शब्द को देखा, जो देहधारी हुआ। उन्होंने संवेदी तरीके से गवाही दी। उन्होंने अपनी इंद्रियों से यीशु को ईश्वर-मनुष्य के रूप में समझा।

वह कहते हैं, जो हमने सुना है, उन्होंने यीशु के शब्द सुने हैं। उन्होंने पहाड़ी उपदेश सुने हैं। उन्होंने मत्ती 24 और 25 में संक्षेपित महान युगांतशास्त्रीय प्रवचन सुने हैं।

जिसे हमने अपनी आँखों से देखा है। उन्होंने उसे अंधों और बहरों को चंगा करते और दुष्टात्माओं को निकालते देखा है।

उन्होंने उसे भीड़ को सिखाते हुए देखा। और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि यूहन्ना लिखता है, जिसे हमने सुना है, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा है, जिसे हमने देखा है, और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि हमने जीवन के वचन के बारे में अपने हाथों से छुआ है। एक यूनानी कहेगा कि यह हास्यास्पद है क्योंकि यहाँ जीवन का वचन एक ईश्वरीय शीर्षक है।

क्या तुमने ईश्वर को देखा, सुना और छुआ? यह बेतुकी बात है। ईश्वर को देखा नहीं जा सकता। उसे छुआ नहीं जा सकता।

चर्च के पिताओं ने बाइबल में, इनमें से कुछ असामान्य कथनों में, गुणों के संचार के रूप में इसे पहचाना, जिसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र को उसी वाक्य में उसके दिव्य स्वभाव से संबंधित एक उपाधि द्वारा नामित किया जाता है जिसमें उसके लिए एक क्रिया का उपयोग किया जाता है, जिसे उसी तरह से नामित किया जाता है। इसलिए उसे परमेश्वर कहा जाता है, और उसी वाक्य में, एक क्रिया उसकी मानवीयता के बारे में बोलती है। 1 कुरिन्थियों 2. इस दुनिया के शासकों ने दिखाया कि वे कितने मूर्ख थे क्योंकि उन्होंने महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया।

आप इसका अनुवाद कर सकते हैं, गौरवशाली प्रभु। गौरवशाली प्रभु, महिमा के प्रभु, एक दिव्य उपाधि है। लेकिन एक पल रुकिए।

उन्होंने भगवान को क्रूस पर चढ़ाया? आप भगवान को क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते। भगवान एक आत्मा है। आप स्वर्ग में भगवान को क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते, लेकिन जिसे उन्होंने धरती पर क्रूस पर चढ़ाया वह वास्तव में भगवान था।

और, बेशक, उसे देखना, उसे सुनना, उसे छूना, या उसे सूली पर चढ़ाना, उसके भौतिक, उसके शरीर, उसके अवतार से संबंधित है। लेकिन यह गुणों के आदान-प्रदान की धारणा है। वही व्यक्ति जिसे भगवान कहा जाता है, वह उन चीजों का अनुभव करता है जो केवल एक इंसान ही अनुभव कर सकता है।

इसलिए, गुणों के संचार के ये उदाहरण हमारे प्रभु की उनके अवतार में एकता को प्रदर्शित करते हैं। वह दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है। व्यक्तित्व का आसन, मसीह के व्यक्तित्व में निरंतरता का तत्व, बेशक, उसकी दिव्यता है क्योंकि वह स्वर्ग में रहने वाला व्यक्ति नहीं था।

वह ईश्वर का शाश्वत पुत्र था, और पुत्र, पूर्व-अवतार पुत्र, देहधारी पुत्र बन गया। इसलिए, निरंतरता उसके दिव्य व्यक्तित्व द्वारा स्थापित होती है। वह किसी व्यक्ति को अपने पास नहीं ले जाता।

वह मानव स्वभाव को अपने में समाहित कर लेता है, जिसमें मानवता के तत्वों, मानव की संरचना, मानव शरीर और मानव आत्मा या आत्मा के गुण समाहित होते हैं। इसलिए, यह सुनने में जितना आश्चर्यजनक लगता है, यूहन्ना और अन्य प्रेरितों ने वास्तव में अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुना और अपने हाथों से शाश्वत वचन, जीवित वचन, जीवन के वचन को छुआ। उल्लेखनीय रूप से।

अर्थात्, यूहन्ना हमें इस तथ्य के लिए तैयार कर रहा है कि अवतार एक अद्भुत रहस्योद्घाटन है। परमेश्वर से बेहतर परमेश्वर को कौन प्रकट कर सकता है? मनुष्य से बेहतर परमेश्वर को कौन प्रकट कर सकता है? इस प्रकार, जब शाश्वत पुत्र मनुष्य बन जाता है, तो वह परमेश्वर को प्रकट करने के लिए एक आदर्श माध्यम, एक आदर्श अभिकर्ता बन जाता है, जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ क्योंकि वह ईश्वर-मनुष्य है, एक आदर्श मिशनरी, यदि आप चाहें, जो अपने लोगों के समूह को अपने संदेश को संदर्भ के अनुसार प्रस्तुत करने में सक्षम है। यह परमेश्वर का संदेश है, और वह परमेश्वर है।

यह ईश्वर का मानवजाति के लिए संदेश है, और वह एक मनुष्य बन गया। ईश्वर और मानवजाति के बीच एक मध्यस्थ है, मनुष्य मसीह यीशु, 1 तीमुथियुस 2.5। 1 यूहन्ना 1 से 4 इस प्रकार कहता है कि हम प्रेरितों ने अपनी इंद्रियों से सनातन वचन, जीवित वचन का अनुभव किया है, और यही वह आधार है जिस पर हम अब उसे आपके सामने घोषित करते हैं। याद रखें, प्रेरितों के काम 1 में, जब वे यहूदा की जगह ले रहे हैं, तो हमारे पास कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो शुरू से ही हमारे साथ था, जो यीशु की सेवकाई को जानता था, और जो मृतकों में से उसके पुनरुत्थान का गवाह रहा हो।

यह कुछ इसी तरह की बात है। प्रेरितों ने देहधारी पुत्र के आँख, कान और हाथ से गवाह के रूप में काम किया है, और वे उसकी घोषणा करते हैं, वे अनन्त जीवन की घोषणा करते हैं, बड़े अक्षर में, परमेश्वर का पुत्र, जो पिता के साथ था और मनुष्यों को परमेश्वर के साथ संगति में लाने के लिए हमारे सामने प्रकट हुआ है। हम उस शब्द का पूरा अर्थ नहीं समझते हैं।

हाँ, चर्च के तहखाने में कॉफी और डोनट्स संगति हो सकती है। यह संगति की अभिव्यक्ति हो सकती है, और संगति ईश्वर के जीवन को साझा करना है। यह उन तरीकों में से एक है जिसके बारे में यूहन्ना 1 यूहन्ना में उद्धार के बारे में बात करता है।

यह कोई अतिरिक्त बात नहीं है, कोई परिशिष्ट या कुछ और नहीं है। नहीं, हम आपको अनन्त जीवन की घोषणा करते हैं ताकि आप हमारे साथ संगति कर सकें, और वास्तव में हमारी संगति,

परमेश्वर के जीवन में हमारा हिस्सा होना, पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है। बेशक, यूहन्ना ने अपनी विशेषता के अनुसार आत्मा को छोड़ दिया है।

व्यवस्थित धर्मशास्त्र पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को साझा करने के बारे में कहता है, और यूहन्ना साझा करता है क्योंकि साझा करने में, जैसा कि कोई भी विश्वासी जिसने किसी के सामने अपने विश्वास को देखा है और किसी को भी रुचि दिखाते हुए देखा है, उसमें बहुत खुशी है। बहुत खुशी है। यूहन्ना अध्याय 1, अब 1 यूहन्ना 1 के बाद, हम अभी भी अवतार को रहस्योद्घाटन के रूप में पेश कर रहे हैं।

हम इसके कुछ चमत्कारों को दिखा रहे हैं, शाश्वत, अमर ईश्वर के अपनी रचना में प्रवेश करने और एक प्राणी बनने के उल्लेखनीय परिणाम। वह ईश्वर-मनुष्य है। वह सृष्टिकर्ता-प्राणी है।

मैं आपको बता सकता हूँ कि, किसी इंसान ने इसे नहीं बनाया है। यह कोई मानवीय कहानी नहीं है; यह एक परीकथा है। यह एक सच्चा और जीवित ईश्वर है जिसने सबसे पहले मनुष्य को अपनी छवि में बनाया, इसलिए रास्ता पहले से ही चिह्नित था।

अब, वह वास्तव में मार्ग अपना रहा है और अपनी पूर्ण दिव्यता को बनाए रखते हुए मनुष्य बन रहा है। यदि आप उनमें से कुछ बातों को लेकर उलझन में हैं, तो वह अपनी सभी दिव्य शक्तियों को बरकरार रखता है। वह जो त्यागता है वह उनका स्वतंत्र उपयोग है और केवल पिता की आज्ञाकारिता में उनका उपयोग करता है।

इसलिए, जब यीशु कहते हैं कि पुत्र के लौटने का समय कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के स्वर्गदूत, न ही पुत्र, तो वे पृथ्वी पर अपने अपमानित अवस्था में बिताए समय की बात कर रहे हैं। बेशक, वह अब यह जानता है, उन कारणों से जो हमें नहीं पता। यह पिता की इच्छा नहीं थी कि पुत्र अपनी दिव्य सर्वज्ञता का प्रयोग करे और पृथ्वी पर रहते हुए उसके लौटने का समय जाने।

निश्चित रूप से, वह अब यह जानता है। उसे अब यह जानना चाहिए क्योंकि वह वापस आने वाला है। यूहन्ना 1, 14 से 18.

हमने कहा कि यूहन्ना 1, 1 से 5, पुत्र की अनंतता, पिता और पुत्र की समानता, कैसे दोनों ईश्वर हैं, कैसे पुत्र सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि था, और कैसे वह अनंत जीवन, जो पुत्र में प्रतिध्वनित होता है और सभी सृजित जीवन का स्रोत है, ईश्वर को प्रकट करता है। तो, यह सामान्य प्रकाशन का स्थान था। खैर, यूहन्ना 1 भी अवतार में विशेष प्रकाशन का स्थान है।

सबसे पहले, पुत्र को पुत्र नहीं कहा गया है; उसे 1 से 5 तक वचन कहा गया है। फिर उसे कम से कम 6, 6, 8 तक की आयतों में प्रकाश कहा गया है। और फिर 9 में, प्रकाश दुनिया में आता है और उस रूपक के संदर्भ में अवतार की बात करता है। और फिर यूहन्ना 1:14 में, वचन देहधारी होता है। वर्तमान में यही हमारी दिलचस्पी है।

हम इस व्याख्यान में थोड़ी देर बाद पिछले पैराग्राफ, प्रकाश के संसार में आने पर वापस आएंगे। और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया, और हमने उसकी महिमा देखी, पिता से

एकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है। यूहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी और पुकारा; यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, जो मेरे बाद आता है, वह मुझसे बढ़कर है क्योंकि वह मुझसे पहले था।

क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब को अनुग्रह पर अनुग्रह मिला है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई, अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, केवल परमेश्वर जो पिता के पास है, उसने उसे जाना है।

यह अनुवाद उस अनुवाद से कहीं बेहतर है जो मैंने इस व्याख्यान में पहले पढ़ा था। शब्द देहधारी हुआ, शाश्वत शब्द जो परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर था, मांस और रक्त का मनुष्य बन गया। यह परमेश्वर के पुत्र के अवतार की शिक्षा देने वाला एक प्रमुख पाठ है; पूर्व-अवतार शाश्वत पुत्र देहधारी पुत्र बन गया, जिसने कुंवारी के गर्भ में मनुष्य नहीं बल्कि सच्ची मानवता को अपने में समाहित कर लिया।

और अब से, वह ईश्वर-मनुष्य है; अवतार स्थायी है। ओह, हम यीशु को पृथ्वी पर उनकी सांसारिक सेवकाई के दौरान और यीशु को अब स्वर्ग में दो राज्यों के सिद्धांत के आधार पर अलग करते हैं। अपमान की स्थिति बेथलेहम में शुरू होने वाला उनका जीवन है और उनके दफन के साथ समाप्त होता है; ईश्वर के पुत्र को दफनाना कितना बीमार है?

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, यह अपमान की स्थिति है, एक दीन अवस्था, जो खुद को पिता के अधीन कर देती है और हम पापियों के स्थान पर खुद को मरने के लिए दे देती है ताकि वह हमें बचा सके। उत्कर्ष की स्थिति उसके पुनरुत्थान से लेकर उसके दूसरे आगमन तक सब कुछ है। यह एक ऐसी स्थिति है और उसके उत्कर्ष की संगत स्थिति है जैसा कि उसे होना चाहिए। उन दो अवस्थाओं में अंतर है। जब वह वापस आता है और अपने उत्कर्ष की स्थिति को पूरा करता है, तो यह चरनी में एक दीन जन्म या क्रूस पर चढ़ना नहीं होगा। वह वचन कहने जा रहा है, अपने दुश्मनों को मार डालेगा, अपना राज्य स्थापित करेगा, धरती पर आएगा, मृतकों को जीवित करेगा, मानव जाति का न्याय करेगा, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का उद्घाटन करेगा।

शब्द मांस और रक्त का मनुष्य बन गया और हमारे बीच में रहने लगा। जॉन दोहरे अर्थ के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ इसका एक उदाहरण है, शब्द निवास एक मूल से आया है जिसका अनुवाद तम्बू के रूप में किया जा सकता है, इसका अर्थ है थोड़े समय या समय की अवधि के लिए रहना, निवास करना, लेकिन हमें लगता है कि इसका दोहरा अर्थ है क्योंकि यदि आप कहते हैं कि तम्बू में रहना अगले शब्दों के साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है और हमने उसकी महिमा देखी है। पुराने नियम का तम्बू निश्चित रूप से, वह स्थान है जहाँ परमेश्वर ने अपनी महिमा प्रकट की; वास्तव में, निर्गमन 40 हमें बताता है कि परमेश्वर की महिमा ने तम्बू को इतना भर दिया कि न तो मूसा और न ही हारून या कोई और उस पवित्र स्थान में परमेश्वर की महिमा की अत्यधिक उपस्थिति के कारण उसमें जा सकता था।

हमने उसकी महिमा देखी है; आप देखिए, बेटे ने पिता को प्रकट किया। नए नियम में विशेष प्रकाशन के कई रूप हैं, उरीम और थुम्मिम को छोड़कर, लेकिन सर्वोच्च रूप परमेश्वर का

लिखित वचन और देहधारी परमेश्वर का वचन है। हमने पिता के इकलौते पुत्र के रूप में उसकी महिमा देखी है; यह अद्वितीय महिमा है, और पतरस रूपांतरण की मात्रा के बारे में गलती करता है, हम समझ सकते हैं कि यह बहुत ज़्यादा है, लेकिन यीशु ही रूपांतरित हुआ है, न कि मूसा और एलिय्याह जो प्रकट हुए। आइए तीन तंबू, तीन निवासस्थान, तीन तंबू बनाएँ।

प्रभु ने शो बंद कर दिया, शो और बाथ कोल को बंद कर दिया, स्वर्ग से आवाज़ आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है और निर्गमन 18 की गूँज के साथ महान, संपूर्ण भविष्यवाणियों और मूसा जैसे महान भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यवाणी की गई है, उसे सुनें और मूसा और एलिय्याह को न सुनें। पुत्र ने अनोखे ढंग से पिता की महिमा को प्रकट किया, और ऐसा लगता है कि उस संदर्भ के कारण जहाँ यीशु कहते हैं कि यहाँ कुछ लोग खड़े हैं जो मनुष्य के पुत्र की महिमा को उसकी महिमा में आते हुए देखेंगे, और फिर मैथ्यू के सुसमाचार में एक रूपांतरण खाता है, ऐसा लगता है कि यह प्रत्याशा है, यह दूसरे आगमन की महिमा का एक छोटा सा टुकड़ा है जिसकी हम वास्तव में कल्पना नहीं कर सकते हैं। न केवल पुत्र परमेश्वर की महिमा को प्रकट करता है बल्कि पुत्र का रहस्योद्घाटन अनुग्रह और सच्चाई से भरा है।

दुख की बात है कि इन आयतों और शब्दों को गलत समझा गया है। खास तौर पर आयत 17 में, व्यवस्था मूसा के ज़रिए दी गई थी, और अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के ज़रिए आई। मैं सिर्फ़ एक अध्ययन बाइबल के बारे में बताऊँगा जिसने अमेरिका पर बहुत प्रभाव डाला।

उस आयत पर एक टिप्पणी में कहा गया था कि पुराने नियम में कानून का पालन करने से मुक्ति मिलती थी, और अब नए नियम में अनुग्रह से मिलती है। हैरानी की बात है। स्कोफील्ड का मतलब उस टिप्पणी से नहीं था, उनके वंशजों और मेरे शिक्षकों ने कहा। मुझे उम्मीद है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया होगा, उन्होंने निश्चित रूप से नियमित रूप से ऐसा नहीं सिखाया। और चलिए बस इतना ही कह सकते हैं कि यह एक भटका हुआ निशान था।

लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि यह एक बड़ी गलतफहमी है क्योंकि ये शब्द, अनुग्रह और सत्य, हिब्रू शब्द हेसेड वेमेट का ग्रीक अनुवाद है, जो भजन 117 में निर्गमन 33 में परमेश्वर के नाम के महान रहस्योद्घाटन में दिखाई देता है। और पुराने नियम में कई जगहों पर, वे पुराने नियम के विचार हैं। तो निश्चित रूप से, वे पुराने नियम में प्रकट हुए थे।

तो फिर इसका क्या मतलब है? व्यवस्था मूसा के ज़रिए दी गई थी, और अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के ज़रिए आया। इसका अर्थ मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में प्रचुर मात्रा में प्रकट अनुग्रह और सत्य से तुलना की जाती है। पुराने नियम में अनुग्रह और सत्य की अवधारणाएँ थीं।

यहीं से यह आता है। तुलना में यह नगण्य था। यह वैसा ही है जैसे पॉल ने कहा, 2 कुरिन्थियों 3 में मूसा के चेहरे पर महिमा थी, जब वह परमेश्वर के साथ पहाड़ से नीचे आया और उसे अपना चेहरा ढंकना पड़ा, तो इस्राएली इसे बर्दाश्त नहीं कर सके।

महिमा कहने के बाद, वह कहता है, नई वाचा की महिमा की तुलना में। वह कई बातें कहता है, लेकिन अंतिम तुलना यह है कि कोई महिमा नहीं थी। खैर, यह महिमा थी, उसने बस यह कहा।

इसे कुछ लोग प्राच्य तुलना कहते हैं। मूसा के चेहरे की महिमा की तुलना यीशु के चेहरे की महिमा से की जाए तो वह महिमा नहीं थी। और पुराने नियम का अनुग्रह और सत्य, जहाँ से यह अवधारणा कई स्थानों पर शुरू होती है, परमेश्वर की महिमा, अनुग्रह और विश्वासयोग्यता, यीशु मसीह के व्यक्तित्व और उसकी सेवकाई में उसके सत्य के प्रकटीकरण से ढँक जाता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु की गवाही में कहा। यूहन्ना के पूरे सुसमाचार में यूहन्ना अध्याय 1 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की भूमिका बिल्कुल यही है। मेरे लिए यह बहुत उल्लेखनीय है कि यहूदियों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में स्वीकार किया।

क्योंकि यूहन्ना 10 के अंत में, आखिरी दो आयतों में, यह कहा गया है, यूहन्ना ने कोई संकेत नहीं दिखाए। अरे, एक मिनट रुको। पुराने और नए नियम के बीच के 400 वर्षों में, मलाकी के साथ परमेश्वर के कोई भविष्यवक्ता नहीं थे।

और फिर जॉन बैपटिस्ट दृश्य में आता है। क्या आप मुझे यह बताना चाहते हैं कि वह व्यक्ति कोई चमत्कार नहीं करता है, और उसे एक भविष्यवक्ता के रूप में स्वीकार किया जाता है? क्या हो रहा है? यह बिल्कुल सही है। जॉन 10 कहता है कि यद्यपि उसने कोई संकेत नहीं किया, फिर भी उसने इस व्यक्ति, यीशु के बारे में जो कुछ भी कहा, वह सच था।

हाँ, पिता ने जॉन को चिन्ह दिखाने के लिए नहीं कहा क्योंकि, जैसा कि पहले से ही था, चर्च का इतिहास गवाह है कि जॉन बैपटिस्ट संप्रदाय था, एक पंथ क्योंकि वह इतना महान व्यक्ति था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उसने कुछ चमत्कार किए थे? उसे एक भविष्यवक्ता के रूप में स्वीकार किया गया क्योंकि परमेश्वर का गर्म वचन उसके मुँह से निकला था। एलिय्याह की तरह, वह मनुष्य, जानवरों या यहूदी नेताओं से नहीं डरता था।

खास तौर पर उस क्रम में नहीं। परमेश्वर का वचन उसके अंदर से निकला। यह स्वयं प्रमाणित था।

उसे कोई संकेत दिखाने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन उसने कोई संकेत नहीं दिखाया ताकि जो वह कहता है वह सच हो। मैं मसीहा नहीं हूँ। मैं सिर्फ उसकी ओर इशारा करने वाला एक गवाह हूँ।

मुझे घटाना होगा। उसे बढ़ाना होगा। यह जॉन की गलती नहीं है।

जॉन द बैपटिस्ट, कि जॉन द बैपटिस्ट का एक पंथ था। वह आदमी और क्या कर सकता था? जब नेता उससे पूछताछ करने के लिए उसे भेजते हैं तो वह अध्याय एक में तीन बार इनकार करता है। मैं मसीह नहीं हूँ।

मैं नबी नहीं हूँ। मैं एलिजा नहीं हूँ। हे भगवान।

वैसे भी, जॉन कहते हैं, यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, और सचमुच, जो मेरे बाद आता है वह मुझसे पहले है क्योंकि वह मुझसे पहले था। यह बकवास जैसा लगता है। ESV ने इसका अनुवाद करने में अच्छा काम किया है।

जो था, वह समय के साथ मेरे बाद आएगा। जॉन बैपटिस्ट का जन्म बेथलेहम में यीशु के जन्म से छह महीने पहले हुआ था। यह मुझसे पहले हो गया है।

वह मुझसे इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि वह समय के मामले में मुझसे पहले था। यूहन्ना परमेश्वर के पुत्र के पूर्व-अस्तित्व की ओर संकेत कर रहा है। पुत्र यीशु बनने से पहले से ही अस्तित्व में था।

अनन्त पुत्र यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जन्म से पहले ही अस्तित्व में था। फिर से, 17 क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी। और सचमुच ऐसा ही हुआ।

वह ईश्वर और मनुष्य के बीच पुराने नियम का महान मध्यस्थ है। एक बहुत बड़ी हस्ती। लेकिन यीशु के आगे वह महत्वहीन हो जाता है।

अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के माध्यम से आया। यीशु, अपने अवतार में, परमेश्वर के प्रकटकर्ता, महान भविष्यद्वक्ता हैं। मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में विशेष रहस्योद्घाटन है।

वह परमेश्वर के अनुग्रह और सत्य को पहले कभी नहीं प्रकट करता। वास्तव में, किसी ने भी परमेश्वर को कभी नहीं देखा है, यूहन्ना 1:18। प्रस्तावना इस तरह समाप्त होती है।

एकमात्र ईश्वर जो पिता के पास है। उसने उसे जाना है। उसने उसे समझाया है।

उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या की जो पहले कभी नहीं की थी। क्योंकि परमेश्वर के पुत्र से बेहतर कौन मनुष्य को परमेश्वर के बारे में समझ सकता है जो मनुष्य बन गया? अभी भी अवतार की इस अद्भुत अवधारणा को रहस्योद्घाटन के रूप में पेश कर रहे हैं। यूहन्ना 14:8 से 11.

यीशु अपने शिष्यों के साथ धैर्यवान है। एक बार जब वह कराहता है, तो मुझे तुम्हारे साथ कब तक रहना होगा? कोई भी ईसाई जिसने कभी बिना उद्धार वाले माहौल में काम किया है, वह इस तरह की बात समझ सकता है। 35 साल तक सेमिनारियों को प्रशिक्षण देने में, मैंने उनसे कहा कि उन्हें दुनिया में काम करने की ज़रूरत है ताकि वे उन लोगों को समझ सकें जिन्हें वे परमेश्वर के वचन की सेवा करेंगे और वे क्या सहन करते हैं।

उनमें से कई लोग हर दिन ऐसा करते हैं। खैर, यीशु ने भी इसे सहन किया, शुक्र है कि हम पापियों को हमारे उद्धार में मदद मिली। और यह कहने के बाद कि वह मार्ग और सत्य और जीवन है।

कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। 14:7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते। अब से तुम उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

ओह। यह तो फिलिप के दिल पर एक स्विच लगा। फिलिप ने उससे और मेरे लोगों से कहा, हे प्रभु, हमें पिता दिखाओ।

और हमारे लिए यह काफी है। हमें ईश्वरीय दर्शन दे दो। हमें यही चाहिए।

इससे काम हो जाएगा। इससे हमारे सारे डर शांत हो जाएंगे। हमारे सारे संदेह दूर हो जाएंगे।

यद्यपि हम आपकी कही कुछ बातें नहीं समझते, फिर भी यह बात पूरी हो जाएगी। इससे बात पक्की हो जाएगी। यीशु ने उससे कहा, जो कुछ थका हुआ था।

क्या मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, और तुम अभी भी मुझे नहीं जानते, फिलिप? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। फिलिप, मैं पिता का महान प्रकटकर्ता हूँ। मैं देहधारी परमेश्वर हूँ।

इस मामले में मैं पिता के बराबर हूँ। धर्मशास्त्रियों को सावधान रहना चाहिए कि वे क्या कहते हैं। केवल पुत्र ही अवतार लेता है।

पिता प्रथम व्यक्ति है और अपमानित नहीं होता। इसलिए मेरे वाक्य और मेरे कथन में योग्यता की आवश्यकता है। लेकिन वह पिता के बराबर है।

मैं और पिता यूहन्ना 10 में एक हैं, जिसे हम भेड़ों को अनन्त जीवन देने और उन्हें बचाए रखने की हमारी क्षमता के रूप में देखेंगे। जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है क्योंकि मैं पिता को पूरी तरह से प्रकट करता हूँ। तुम कैसे कह सकते हो कि हमें पिता दिखाओ? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ, वे मैं अपनी ओर से नहीं कहता।

लेकिन पिता जो मुझमें रहता है, अपने काम करता है। मैं ईश्वरीय रहस्योद्घाटन बोलता हूँ। मैं इसे ईश्वर के रूप में बोलता हूँ।

मैं एक मनुष्य के रूप में यह बात कह रहा हूँ। मेरा विश्वास करो, मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें है या फिर कुछ और। अपने कामों के कारण ही विश्वास करो।

वह इस बात पर गर्व करता है कि वह कितना धैर्यवान उद्धारकर्ता है। हमें शिष्यों पर बहुत ज़्यादा कठोर नहीं होना चाहिए। हम इससे ज़्यादा बेहतर नहीं कर पाएँगे।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ईश्वर का अवतार हुआ है? वे जानते थे कि वह एक इंसान है। वह उनके साथ चलता था। वह उन्हें सिखाता था।

वे रात को लेट गए और सो गए और सुबह उठे। शायद वह पहले से ही भुगतान नहीं कर रहा था, लेकिन वह वहाँ था। उसने खाया और इसी तरह।

वह एक इंसान था, लेकिन उसने उनके दिमाग को उड़ा दिया। यह कैसा इंसान है? मछुआरे ने कहा कि हवाएँ और लहरें उसकी आज्ञा मानती हैं। यह कैसी शिक्षा है? वह राक्षसों को आज्ञा देता है, और वे बाहर निकल आते हैं।

ओह, वाह। अवतार महान रहस्योद्घाटन है। परमेश्वर का विशेष रहस्योद्घाटन।

खास क्यों? क्योंकि यीशु एक ही समय में एक ही स्थान पर अवतरित हुए, और खुद को एक ही लोगों के सामने प्रकट किया। अब, परमेश्वर की कृपा से, यूहन्ना 14, 15 और 16 में यीशु के शब्दों की पूर्ति में, उसने और पिता ने आत्मा को भेजा और प्रेरितों को याद दिलाया, प्रेरितों को सिखाया, और उन्हें सत्य की ओर ले गया। और हमारे पास नया नियम है, जो न केवल पुराने नियम को पूरा करता है बल्कि हमें ये बातें सिखाता है।

इसलिए कि यद्यपि हम प्रेरितों के गवाहों के कारण वहाँ नहीं थे, फिर भी हमें वहाँ ले जाया गया और हमने सुना और सीखा और विश्वास किया और हम बच गए और हम बढ़े। नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, यूहन्ना के सुसमाचार में अवतार। इतना ही नहीं, प्रेरितों ने न केवल अपनी इंद्रियों से यीशु का अनुभव किया, यूहन्ना 1:1 से 5, न केवल उन्होंने देहधारी पुत्र में परमेश्वर की महिमा, अनुग्रह और सत्य को देखा, यूहन्ना 1:14 से 18, न केवल उसे देखकर उन्होंने पिता को देखा।

इस तरह से उसने परमेश्वर को प्रकट किया। लेकिन यीशु ने कहा और दिखाया कि वह जगत की ज्योति है। यूहन्ना के सुसमाचार में बहुत से विषयों की तरह, यह भी अध्याय एक में प्रकट किया गया है।

सच्चा प्रकाश। ओह, यह पहले से ही छह से आठ तक में है। परमेश्वर की ओर से एक आदमी भेजा गया था जिसका नाम जॉन था।

दिलचस्प बात यह है कि चौथे सुसमाचार में प्रेरित यूहन्ना को कभी यूहन्ना नहीं कहा गया। वह वही व्यक्ति है जिससे यीशु प्रेम करते थे। वह वही है जिसने अंतिम भोज में यीशु के सामने अपना सिर टिकाया था, लेकिन उसे यूहन्ना नहीं कहा गया।

यह पद जॉन बैपटिस्ट के लिए आरक्षित है, जो महान अग्रदूत है। जॉन एक गवाह के रूप में आया था ताकि वह प्रकाश के बारे में गवाही दे सके ताकि सभी उसके माध्यम से विश्वास कर सकें। इसका अर्थ है प्रकाश में, जो यीशु है।

वह प्रकाश नहीं था। फिर से, जॉन बैपटिस्ट को यीशु से अलग करने के लिए और कुछ नहीं कर सकता था। मूर्तिपूजा के पतन के बाद से यह मानवीय प्रवृत्ति है जो जॉन बैपटिस्ट पंथ के लिए जिम्मेदार है।

न तो जॉन बैपटिस्ट, न ही जॉन द इन्स्पайर्ड। मैं अपना मामला यहीं समाप्त करता हूँ। प्रकाश अंधकार में चमकता है।

हमने इसे ऊपर देखा। यूहन्ना प्रकाश नहीं था, आठवीं आयत, लेकिन वह प्रकाश के बारे में गवाही देने आया था। और वह प्रकाश परमेश्वर का पुत्र है।

आप देखिए, यूहन्ना ने अपने सुसमाचार की शुरुआत, जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में कहा था, बेटे को बेटा कहकर नहीं, या उसे यीशु या भविष्यद्वक्ता, पुजारी या राजा कहकर नहीं, बल्कि उसे शब्द और अब प्रकाश कहकर की। यह कोई संयोग नहीं है। उन दोनों चित्रों में बेटे को देहधारी दिखाया गया है, और वह देहधारी बेटा है, हालाँकि शीर्षक थोड़ा बाद में आता है, परमेश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में।

हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। भगवान भी यही करते हैं। प्रकाश प्रकाशित करता है।

यह समझ लाता है। ओह, भगवान का बेटा भी ऐसा ही करता है। जो लोग उसे सुनने के लिए तैयार हैं, जो लोग उसे बंद कर देते हैं और उसे रद्द कर देते हैं, उनके लिए उसका प्रकाश अंधकार लाता है।

यह न्याय लाता है, जिसे हम अपने अगले व्याख्यान में अध्याय नौ में देखेंगे। सच्चा प्रकाश, जो सभी को प्रकाश देता है, दुनिया में आ रहा था। इस श्लोक को अच्छे लोगों, दार्शनिकों और अन्य लोगों द्वारा गलत समझा गया है और इसे किसी तरह का दार्शनिक कथन बना दिया गया है।

ऐसा नहीं है। यह एक अवतारात्मक ऐतिहासिक कथन है। संदर्भ में शब्दों को सुनें।

परमेश्वर की ओर से एक व्यक्ति भेजा गया जिसका नाम यूहन्ना था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला अग्रदूत था। वह ज्योति के बारे में गवाही देने के लिए एक गवाह के रूप में आया, और उसने ऐसा किया भी।

उसने यीशु को रास्ता दिया। इस अध्याय में आगे चलकर, उसके कुछ शिष्य आते हैं, और वे यूहन्ना से हटकर यीशु का अनुसरण करते हैं। हाँ, यह बिल्कुल यूहन्ना की बात है।

जॉन कहता है कि वह परमेश्वर का मेम्ब्रा है। वह दुनिया के पापों को दूर करता है। वह यह नहीं कहता कि मेरे साथ रहो।

नहीं, वह कहता है, जाओ। जब तुम यीशु का अनुसरण करोगे तो मेरा मंत्रालय पूरा हो जाएगा। मैं एक गवाह हूँ।

वह प्रकाश है। यूहन्ना प्रकाश नहीं था, लेकिन प्रकाश के बारे में गवाही देने आया था। सच्चा प्रकाश, पद 9, दुनिया में आ रहा था।

यह अवतार का कथन है। हाँ, लेकिन यह इसे योग्य बनाता है। यह सच्चा प्रकाश कहता है, जो सभी को प्रकाश देता है।

क्या इसका मतलब यह नहीं है कि सनातन लोगो के रूप में, वह हर इंसान को ज्ञान देता है? आप इसे यूहन्ना 1, 3 और 4 से प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यहाँ नहीं। यह ऐसा नहीं कह रहा है। यह कह रहा है कि देहधारी पुत्र ने पिता को प्रकट किया।

वह ईश्वर का प्रकाश है। और वह प्रकाश मनुष्यों पर चमकता है, और यह दो प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करता है। सच्चा प्रकाश, जो उसके सांसारिक मंत्रालय में उसके संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को प्रबुद्ध करता है, वह अर्थ और संदर्भ है जिसके लिए वह दुनिया में आया था।

और अवतार के कारण, श्लोक 10, वह संसार में था। और संसार उसके द्वारा बनाया गया था। श्लोक 3 पर वापस जाएँ। सृष्टिकर्ता सृष्टिकर्ता को प्रकट करने के लिए एक प्राणी बन गया।

वह संसार में था, और संसार उसके द्वारा बना। फिर भी संसार ने उसे नहीं जाना। हमारे पास स्वर्ग में एक महान महायाजक है जो अस्वीकृति को समझता है।

करुणामय पादरी और ईसाई मित्र उन लोगों की मदद कर सकते हैं जिन्हें अस्वीकार कर दिया गया है। और लोग अस्वीकार किए जाते हैं। मैं ऐसे छात्रों को जानता हूँ जिन्हें उनके माता-पिता ने अस्वीकार कर दिया था जबकि वे छात्र यीशु में विश्वास करते थे।

उन्होंने वैसे भी परमेश्वर के बताए मार्ग का अनुसरण किया और सेमिनरी में गए। लेकिन यह एक कठिन बात है। खैर, उनके पास स्वर्ग में एक उच्च पुजारी है, और हमारे पास भी है, जो अस्वीकृति को समझते हैं।

क्या इससे बड़ी अस्वीकृति और हो सकती है कि सृष्टिकर्ता एक प्राणी बन जाए और उसके प्राणियों द्वारा उसे अस्वीकार कर दिया जाए और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाए? यह अकल्पनीय है। वह अपने लोगों के पास आया, और उसके अपने लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। वह अपने लोगों के पास आया, उसकी अपनी चीजों के पास।

यही अभिव्यक्ति यूहन्ना 19 में भी इस्तेमाल की गई है, जहाँ क्रूस से यीशु अपने प्रिय शिष्य यूहन्ना के बारे में कहते हैं, वे कहते हैं, यूहन्ना, अपनी माँ को देख। और स्त्री, स्त्री, वैसे, यह अध्याय 2 में दिखता है जब वे उसे सुधारते हैं और वे उसे धीरे से सुधारते हैं। यह कोई कठोर बात नहीं है।

हे महिला, महिला, वह क्रूस पर अपनी माँ का उपयोग करता है। वह क्रूस पर अपनी माँ को कोस नहीं रहा है, भगवान के लिए। अपने बेटे को देखो।

और फिर यह कहा गया है, उसी समय से, जॉन ने उसे अपने घर ले लिया। जॉन 19, 27. और उसने शिष्य से कहा, "देखो, तुम्हारी माँ है।"

उस घंटे से, शिष्य उसे अपने घर ले गया, यह वही अभिव्यक्ति है जो हम यहाँ यूहन्ना 1:11 में पाते हैं। मैं इस प्रकार अनुवाद करूँगा कि वह अपने घर आया। यह सिर्फ इतना कहा गया है कि वह सृष्टिकर्ता था।

वह अपने घर आया, लेकिन उसके अपने लोगों ने उसका स्वागत नहीं किया। हे भगवान! वह अपनी बनाई दुनिया में आया।

कुछ लोगों को लगता है कि एक बढ़ई के रूप में उनके पेशे पर कुछ नाटक है, एक इंसान के रूप में, शायद ऐसा हो। वह अपने ही भवन में आया, और उसके अपने लोगों, यहूदियों ने उसे अस्वीकार कर दिया। बाइबल यथार्थवादी है।

यह कोई परीकथा नहीं है। यूहन्ना का सुसमाचार यथार्थवादी है। प्रकाश के संदर्भ में अवतार के बारे में बात करने के बाद, हम श्लोक 9, 10 और 11 पढ़ते हैं, जो यीशु को एक प्रतिक्रिया देते हैं, और वह यह है।

यह अस्वीकार है। यह अस्वीकृति है। शुक्र है कि 12 और 13 यीशु को एक और प्रतिक्रिया देते हैं।

और यही है। उसे स्वीकार करना। उस पर विश्वास करना।

और इसका श्रेय भी परमेश्वर के सर्वोच्च अनुग्रह को जाता है। हम नए नियम में विशेष प्रकाशन पर शिक्षा दे रहे हैं। अब, हम अवतार पर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

और हमारे अगले व्याख्यान में, हम यीशु को दुनिया की ज्योति के रूप में इस विषय पर आगे बढ़ते हुए महान अध्याय, अध्याय 9 तक जाएंगे। यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र संख्या 11 है, नए नियम में विशेष प्रकाशितवाक्य। अवतार, जॉन परिचय।